आत्मज्ञ का स्वरूप

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

आत्मा के जानने वाले को आत्मज्ञ कहते हैं। ज्ञानी पुरुष आत्मज्ञ होता है। वह भेद विज्ञान का ज्ञाता होता है। शरीर और आत्मा को भिन्न–भिन्न मानता है। स्वामी विवेकानन्द के गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने स्वामीजी को आत्मज्ञान करवाया। जो खोजता है वह मोती को अवश्य प्राप्त कर लेता है। प्रयास और प्रयत्न की आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है वह आत्मज्ञ हो जाता है। विवेकानन्द ने आत्मज्ञान से विश्व को प्रभावित किया। इस संसार में आत्मज्ञ कम हैं। अधिकांश लोग भौतिक जगत को ही सत्य मानकर उसी में मग्न रहते हैं। वे सत्य के स्वरूप को जानते ही नहीं। जो सभी जीवों को समान मानता है, जो सभी में जीव का दर्शन करता है, जो संसार से निराशक्त है और अपने समान सभी जीवों को मानता है वह आत्मज्ञ है।

शरीर और आत्मा को पृथक समझने वाला आत्मज्ञ होता है। शरीर हाड़–मांस का पुतला है। कंचन कामिनी सब नश्वर हैं। यह शरीर भौतिक है। यह पंचतत्वों से बना हुआ है। इसे औदारिक शरीर कहते हैं। इसके अन्दर विराजमान चेतन आत्मा ही शास्वत् तत्व है उसी के कारण शरीर चेतनवत् प्रतीत होता है। मानव जीवन बड़े पुण्य का परिणाम है। इसका उपयोग धर्म, कर्म करने के लिए है। जिसने इसका उपयोग कर लिया उसका जीवन श्रेयष्कर है।

भारत देश में अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। इन महापुरुषों में दादा भगवान एक ऐसे महापुरुष है जिनके आचार और विचार से मानवता प्रभावित हुई है। दादा भगवान आत्मज्ञ थे। उन्हें भेदविज्ञान का ज्ञान हो गया था। वे कहते थे कि दादा भगवान किसी का नाम नहीं बल्कि परमात्मा का दूसरा नाम है। श्री अम्बालाल मूलजी भाई पटेल जो गुजरात के रहने वाले थे, उन्हीं में कुछ ऐसा चमत्कार हुआ कि लोग उनसे प्रभावित हो गये और उन्हें दादा भगवान कहने लगे।

दादा भगवान को विश्व दर्शन हुआ और दर्शन के महत्वपूर्ण विषय इनके मन में स्वयं स्फुटित हो गये। मैं कौन हूं? ईश्वर कौन है? संसार कौन चलाता है? कर्म क्या है? मोक्ष क्या है? इत्यादि संसार के आध्यात्मिक प्रश्नों का सम्पूर्ण रहस्य इनके मन में प्रकट हुआ। दादा भगवान कौन? यह प्रश्न लोगों के मन में प्रायः उठता है। इसका समाधान करते हुए वे कहते थे कि यह जो आपको दिखते है, वे दादा भगवान नहीं है, वह तो अम्बालाल मूलजी भाई पटेल है। हमारे भीतर जो अजर, अमर, अविनाशी आत्मा है जो हमारे भीतर प्रकट हुआ है, वह दादा भगवान हैं। दादा भगवान चौदह लोकों के स्वामी हैं। वे आपमें भी है, हममे भी है, और सभी में है। आपमें अव्यक्त रूप से रह रहे हैं और हमारे भीतर सम्पूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं।

दादा भगवान ने एक ऐसा जीवनोपयोगी सूत्र दिया है– भुगते उसी की भूल। इस जगत में भूल किसकी चोर की या जिसका चोरी हुआ उसका? इन दोनों में से भुगत कौन रहा है? जिसका चोरी हुआ वहीं भुगत रहा है। चोर तो पकड़े जाने के बाद भुगतेगा और उसके कृत्य का दण्ड उसे मिलेगा। आज खुद की भूल का दण्ड मिल गया। खुद भुगते तो फिर दोष किसे देना। भूल है, तब तक भुगतना पड़ता है। जब भूल खत्म हो जायेगी, तब इस दुनिया की कोई भी शक्ति भुगतने के लिये दण्ड नहीं देगी। इस संसार में यदि मानव कोई गलती करता है तो न्यायालय उसे दण्ड देता है। अपने किये गये कर्मो का कुदरती न्यायाधीश एक ही है। उसका एक ही न्याय है। उसके न्याय से पूरा जगत चल रहा है। जिसे इनाम देना है वह उसे इनाम देता है, जिसे दण्ड देना है वह उसे दण्ड देता है। जब दृष्टि निर्मल होगी तभी न्याय दिखेगा। जब तक स्वार्थ दृष्टि रहेगी तब न्याय नहीं दिख सकता। मानव अपने कर्मजाल में बंधा रहता है। उसको कोई दूसरा नहीं बांधता, वह तो अपने ही भूल में बंधा हुआ है। यह भूल खत्म हो जाये तो वह मुक्त हो जाएं। वास्तव में तो मुक्त ही है। किन्तु भूल की वजह से बंधन भुगत रहे है। जब कोई खुद ही न्यायाधीश, खुद ही गुनहगार, खुद ही वकील तब न्याय किसके पक्ष में होगा। स्पष्ट है कि खुद के ही पक्ष में न्याय होगा। भीतर का न्यायाधीश कहता कि आपसे भूल हुई है। फिर भीतर का ही वकील वकालत करता है कि इसमें मेरा क्या दोष? ऐसा करके खुद ही बंधन में आता है।

आत्महित के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम किसके दोष से बंधे हैं? दोष हमारा ही है, इसलिए हम बंधे है। जगत की वास्तविकता का रहस्य ज्ञान लोगों को है ही नहीं। जिसके कारण इस भवचक्र में भटकना पड़ता है। जब कर्मों का हिसाब–किताब बराबर हो जाता है, तब न भूल रहती है न भटकाव, क्योंकि लेखा–जोखा बराबर हो गया। जो दुःख भुगते, उसी की भूल और सुख का भोग करे तो उसका इनाम। ईश्वर का कानून वास्तविक कानून है। जिसकी भूल होगी उसी को पकड़ेगा। इस संसार में हम एक दूसरे को धोखा दे सकते हैं, झूठ बोल करके और झूठी गवाही देकर न्यायालय से मुक्त हो सकते हैं, किन्तु जो वास्तविक न्यायाधीश है, जो सबकुछ देख रहा है, उसके न्याय से हम कैसे मुक्त हो सकते हैं? हमारे कर्म का फल तो हमे ही भुगतना पड़ेगा, हम चाहे या न चाहे।